नैतिक शिक्षा से संस्कारित समाज महिलाओं का सम्मान करेगा : राजयोगिनी डॉ निर्मला दीदी

आबूपर्वत,ज्ञानसरोवर,२८जून २०१४। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी संस्था आर ई आर एफ के महिला प्रभाग द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके संपन्न हुआ। इस सम्मेलन एवं चिंतन शिविर का विषय था, महिला एवं हिंसा मुक्त समाज।

ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशक **राजयोगिनी डॉ निर्मला दीदी** जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। आपने कहा कि महिलाओं के प्रति हिंसा का प्रमुख कारण है आज का तमोप्रधान समय। हर कोई विकारों की अग्नि में जल रहा है। शिक्षा प्रणाली अनुपयक्त है। दुनियाँ भौतिकता के आधार पर संचालित हो रही है। सभी को अधिक से अधिक चाहिये। महिलाओं को प्रदर्शन की वस्तु बना कर प्रस्ततु किया जा रहा है। देह को सजाने संवारने के पीछे लोग लगे हुए हैं। यह घातक प्रवृति है। मीडिया के माध्यम से अनेक प्रकार की बुराइयाँ बढ़ रही हैं। अपने खिलाफ हुई हिंसा के लिए कुछ हद तक माताएं बहने भी जिम्मेवार होती हैं। उन्हें संयमित रहना होगा। निवारण है कि माताएं स्वयं को मजबूत बानावें। यह मजबूती अंदर और बाहर दोनों प्रकार की होनी चाहिये। आंतरिक मजबूती के लिये फिर एक बार आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता पड़ेगी। राजयोग का अभ्यास करना होगा। आत्मिक ज्ञान वह औषधि है जो सभी समस्याओं का समाधान है। माता पिता प्यार से बच्चों की पालना करके उनको संस्कारित कर पाएंगे।

विश्व प्रसिद्ध नृत्यांगना, पद्म विभूषण सम्मान से सम्मानित बहन **सोनल मानसिंह** ने अपना उद्घाटन भाषण देते हुए कहा कि समाज में हर जगह संतुलन की जरूरत होती है। संतुलन आवश्यक है। नारी का अर्थ है कि जिसका कोई दुश्मन न हो। नारी सृष्टि है। नारी संसार है। नारियों को इस बात की जानकारी है या नहीं, मालूम नहीं, मगर भारत में नारियों को इन बातों की शिक्षा देनी होगी। दुनियाँ को अहिंसा का पाठ पढ़ाना होगा। शायद तब हिंसा मुक्त समाज बन सके। हमें नैतिक शिक्षा मिली मगर आज उपभोक्ता वाद का बाजार गर्म है। चाहे किसी भी प्रकार से धनोपार्जन करना ही उनका लक्ष्य बन गया है। यह कैसा जीवन है? महिलाओं के सशक्तिकरण की बातें होती हैं मगर पुरुषों को ऐसी आवश्यकता नहीं है? शायदों पुरुषों को प्रबुद्ध बनने की आज की तारीख में ज्यादा जरूरत है। समाज के हर वर्ग को आज संभलने की जरूरत है। माताओं की भूमिका संस्कार निर्माण में प्रमुख है। महिलाओं की उचित सम्मान नहीं मिला है समाज में जो उसे मिलना चाहिये।

उक्त अवसर पर ब्रह्माकुमारीज महिला प्रभाग की अध्यक्षा **राजयोगिनी चक्रधारी बहन** ने मुख्य वक्ता की हैसियत से कहा कि भारत भूमि पर स्वयं परमात्मा ने भी नारी को वन्दे मातरम के रूप में पुकारा है, यहाँ भारतमाता की जयघोष हर ओर सुनायी पड़ती है तथापि इन दिनों कुछ इस प्रकार की घटनाएं देश में हुई हैं जिस से देश का सिर झुक गया है। आज महिलाओं के जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है। मगर सतयुगी सृष्टि में महिलाओं को लक्ष्मी के रूप में सम्मान प्राप्त था। माँ की गोद में लालन पालन लेने वाले कोई पुत्र या पुरुष किसी माँ का घातक बन सकता है क्या? नहीं। परिस्थिति बदल गई है। आज नारियों को जगने की जरूरत है। उनके जगने से ही समस्या का निदान होगा। इसके लिये परमात्विक शक्ति को अपना संबल बना कर नारियों को अपने शक्ति स्वरूप को पुनः धारण करना होगा। नारियों को उनके उच्च स्थल से गिराने वाला कोई पुरुष नहीं है बल्कि नारी ने स्वयं ही स्वयं को निम्न बनाया है। नारी रचयिता है और पुरुष उसकी रचना है। रचना कभी भी रचयिता की बराबरी नहीं कर सकता। वह रचयिता को हानि पहुँचाने की तो सोच भी नहीं सकता। अतः नारी को अपने उसी श्रेष्ठ स्वरूप को धारण करना होगा। तभी समस्या का समाधान होगा।

पंजाब महिला आयोग की अध्यक्षा **सुश्री परमजीत कौर** ने विशिष्ट अतिथि की भूमिका में आज के अवसर पर कहा कि मैं आज चौंथी बार इस ईश्वरीय स्थल पर आई हूँ। यहाँ से हमेशा मैंने अद्भुत शक्तियाँ प्राप्त की हैं। हमारा महान भारत जहाँ महिलाओं की पूजा होती रही है, जहाँ राम से पहले सीता और कृष्ण से पहले राधा का नाम लिया जाता है, उस भारत वर्ष में आज महिलाओं की इतनी दुर्दशा क्यों हो गई है? आज पिता,भाई,शिक्षक,रिश्तेदार सभी महिलाओं की इज्जत के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। कानून कई हैं मगर उनकी धज्जियाँ उड़ती रहती हैं। कड़े कानूनों के बावजूद एवं कड़े फैसलों के बावजूद भी स्थिति सुधर नहीं रही। शायद शिक्षा प्रणाली में

बदलाव की जरूरत होगी। लोगों को संस्कारित करना होगा। नैतिक शिक्षा की कमी है। लोगों को सबसे पहले इंसान बनाया जाए। तब स्थिति सुधर सकती है।

गुजरात महिला आयोग की अध्यक्षा **बहन लीना अंकोलिया** ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर अपने उद्गार प्रकट किये। प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी ने मुझे आदिवासी महिलाओं की सुरक्षा एवं उनके विकास का मौका दिया है, मैं आभारी हूँ। महिलाओं के अंदर अद्भुत शक्तियाँ है जिन्हें जानना चाहिये। महिलाओं को यह भी जानना चाहिये कि सरकार ने उनके लिये क्या क्या सुविधाएं दी हैं। उन्हें उनका लाभ लेना चाहिये। आज के समाज में अज्ञानता एक अभिशाप है। इसे दूर करना होगा। टी वी ने हमारे समाज को बिगाड़ा है , उसके कार्यक्रम में सुधार होना चाहिये।

मुख्य अभियंता **श्रीमती मेघा शिंदे** ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन को संबोधित किया और कहा कि आज हर ओर महिलाओं के खिलाफ हिंसा का माहौल है। यह मानवाधिकार का बड़ा प्रतिरोध है। इसके खिलाफ उचित कदम लिये जाने चाहिये। आध्यात्मिकता की एवं नैतिकता की शिक्षा इस दिशा में कारगर होगी। इनका प्रयोग किया जाना चाहिये।

मुख्यालय संयोजिका **डॉ सविता** ने कार्यक्रम का संचालन किया।दिल्ली की **ब्रह्माकुमारी रानी** बहन ने योगाभ्यास करवाया। ***(रपट : बी के गिरीश,ज्ञानसरोवर)***